श्री वीतरागायनमः

अथ

छाजूराम हनुमद्दाछाणीदायमा पराजयः

यह पुस्तक

पं० मुनालाल जैनाग्रवालने

वर्धामे

जैन सुधाकर छापखानेमे मुद्रित कराई

प्रथम बार १०००

नौच्छार.—

श्रीमज्जिनेन्द्रायनमः

॥ अथछाजूरामहनुमद्ब्राह्मणोदयमपराजयः प्रारभ्यते ॥

श्रीजिनेशन्दयाऽर्थाशमव्वपापप्रणाशकम् ॥ चिदानन्द सुखागार श्रीमिसध्वार्थसिद्धये १ श्रीपरमेश्वरकी कृपासे एकपरमहर्षाऽल्हादक वृत्तान्त सनाया जाताहै वह यह है कि हमारे सभापति पण्डित मुनालालजीने शिवबख्शजीका जैनके सुपुत्र जोहरीमल्लकी जन्मपत्रिका बनाईथी जिसकू केइ महा रवासेके पण्डितवरोने देखकरिके ऐसा विचार कियाकि ज्योतिषमें कोईप्रकारसें अशुद्धि ठहरायकरिके शास्त्रार्थ करना ठहरायदेंगे फिर अशुद्धता सिद्धकरिके जैन पडिण्तकू जितलिया जैन लोक जीतगये ऐसा हल्ला करा देंगे हमकू उनके ऐसे गुप्तमन्त्रका कोईप्रकारसें ज्ञातत्वहुवातो हमलोक पण्डितजीकू कहाकि यदि ऐसाहुवातो विपक्षी लोक ऐसें कहेंगे कि हमने रिवानेकी श्रीमथ्यात्वाऽन्धकारविनाशिनी जैनसभाकूं जीतली क्योंकि इस सभाके विपक्षीमहामेंही ठीक हैं आगेभी बहुतकुछ आपके उपरि जाल रचेगये हैं तब पडितजी कहा कि श्रीजिनेन्द्रदेवाऽधिदेवके प्रसादसें श्रीमती मिथ्यात्वाऽन्धकार विनाशिनी जैनसभाकी तो सदाही जय रहेगी फिरतो पण्डितजी रात्रि दिवस उनके उपायमें लगाये फिर पण्डितजी श्रीनारायणजी ज्योतिर्विद्का सम्मति करी तो उनोने कहाकि कुछ चिन्ता नहीं सब ठीक हो जावैगा आप उनकू चिट्ठी लिखभेजो कि परस्परवार्तालाप करिके गलतहल्यो ऐसाकहकरिके प. श्रीनारायणजीतो कोई आवश्यक कार्यार्थ शीकर चले गये फिर एकदो दिनके पीछे वह लोक एकत्र होय करिके पण्डितजी मुनालालजीकू बुलाया तो पण्डितजी गयेहां उनोने कुछ शास्त्रार्थ करणेका प्रश्न छेडा तो पण्डितजी कहा कि पत्रद्वारा निर्णय करल्यो अशुद्ध होगा तो हम क्षमा करायकरि शुद्ध कर देंगे रूबरू बात मतकरो तब उनोने कहा कि जुबाब तो या तब पण्डितजी कहाकि हम जुबाब आपकी सेवामें पत्रद्वारा भेजेंगे तो फिर ऐसा पत्रभेजागया ताकीप्रति

श्रीः २४

अङ्क १

श्रीमत् वास्तव्यरियामा छाजूरामजी हनुमानजी ज्योतिर्विद्कीसेवामें यह प्रार्थना है कि चिरञ्जीवि जोहरीलालके जन्मपत्रका स्पष्ट लग्न जो मैंने कियाथा उसमें आप अशुद्धता निकाली सुनते है सो आप एक पत्रमें गणितलगायकरिके भेजदीजे नीचे लिखेकोष्टक भरकरि भेजदीजे यन्त्र इस पत्रके नीचेलगायदिया गया पत्रद्वारा निर्णय करलीजे पत्रद्वारावार्तालापकरनेमें अपनी मित्रता बणी रहैगी अन्यथा मित्रताभङ्ग होणेका सन्देह रहता है मेरी आपकी मित्रता प्रथम मिलाप हुवा जिसमें अतिदृढहै सोवणी रहणीही चाहिये और लोकोंको कहो हम एकमाना नहीं

मैं ग्रामान्तर जाणे वाला हूँ सो शीघ्रही निर्णयकर लीजे जिस करी लग्न सुधार-करि दूसराजन्मपत्र बनादियाजावे फिर मैं चला जावूंगा तो कुछ न होगा अवश्य मैं भूलगयाहूंगा क्योंकि मैं केवल ज्ञानी नहीं हूं मैंने कार्य्य सौरपक्ष रामविनोदी जयपुरकेतिथिपत्रसें कियाथा फिर आप अशुद्धवतलाया इसकारण आहर्गणिकगणितसें करणग्रन्थानुसारभी सर्वगणितकरिके देखलिया परन्तु अशुद्धता तो नहीं ज्ञान होती लग्नतोतुला ही आताहै आपके किये बहुत जन्मपत्रवर्षफल विद्यमानहै सर्वमें करणग्रन्थानुसारगणित नहीं है तिथिपत्रसेंही है यहांतक कि लग्नस्पष्टभीसारिणीसेंही धरदेतेहै बहुत स्थानमें जहांपर अत्यन्त सन्धिस्थ लग्नहै तहांपर विनाकरण ग्रन्थानुसारगणित की अशुद्धताभी देखी गईहै सो अपने कृतकार्य्योंपर अल्पदृष्टीभी नदेयकार दूसरोंपर असत्य दोषारोपणकरना यहकोई सज्जनोंका कार्य्य नहीं है हमने जो गणित कियाहै सो तीन तीन बार करिकरिके देखाहै तो तीनूव एकही मिलगया है तब धरा है फिर आप कैसें अशुद्ध कहते हैं आपहठ छाडदीजे यदिहठ नहीं है तो आपकों गणित आता नहीं हैं यदि ऐसाही है तो स्पष्ट क्यों नहीं कहदेते कहांतके स्पष्ट नहीं कहोगे परिणाममें तो कहणाही होगा तथा आपसर्व्व लोक जब एकत्र होते हो तब गणित होता है इकल्ले नहीं करते सदैव ऐसें देखा जाता है इसलियेभी सर्व्व विचक्षण सज्जनोंकों आपकी गणित शास्त्रा नभिज्ञता ज्ञात है विशेषाकिमधिकंविज्ञवरेषु सं. वै. १९५५-४-२-३

आपका भार्थी

राजमौद्गुगरवाल्जैन वणिक् प्रधानाध्यापक मुनालाल

इस चिट्ठीके पीछे लग्नसाध्योपकरण लिख करि उनके सन्मुख एक एक कोष्टक खाली अङ्क भरणेकूं लिखभेजेथे और इसपत्रके शिरैपर यह समाचारभीथा कि गणितमें आंगोंकी अशुद्धता होवेगी तो गणित अशुद्ध समजाजावेगा गणितसिद्धांतशिरोमणिके अनुसारभीजपरिकर्म्माष्टकका कार्य्य जहांहो तहां विभागछोडोगेतो अशुद्ध समजाजावेगा

ऐसापत्रलिखभेजाथा फिर गणेशदासजी (जोकि चिरञ्जीवि जो हरिमल्लकाकाहै) उन लोकोंकों कहाकि आपकूं ऐसा उचित नथा कि इतने मनुष्योंमें पण्डितजीकूं बुलाया परस्पर बतलालेतेतो अच्छा होता तो उन्होंने ऐसा उत्तर कहाकि यदि हमदोनूंही परस्पर बतलायलेवैं तो दूसरा भूलकैसें जाणे ऐसा कहकरिके सब मनुष्य चले गये अरबाजारमें कहते फिरे जैनोंका पण्डित हमजीत लिया कुछ आता नहीं इत्यादि कहते फिरे तो हमनेंभी सुनलिया तो हमनें बहुत उपालम्भ दिलायाकि ऐसा मत कहो परस्पर समझलेवो तब उन्होंने स्वीकार

तो किया परन्तु खोटे अभिप्रायसें फिर हमारे पास एक लडका आयाकी पण्डित-जीको वहलोक परस्पर समजलेनेकूं बुलावै है तब हम पण्डितजीसें प्रार्थना करी-तब पण्डितजी आज्ञापन किया कि परस्परही समजना था तो हमारे घरपरक्यौ-ना आये अब उनका परस्पर समजनेका अभिप्राय नहीं है अन्यथा अङ्क १ हमके पत्रका उत्तर कैसें न दिया तो फिर अङ्क २का पत्र ऐसालिखकरिभेजा तिसकी प्रति

श्रीः२४

अङ्क२

श्रीयुत पं. हनुमानजी प्रभृतिकज्योतिर्विदोंकीसवामें प्राथना है कि

१ पत्र आपकूं कलदिन दीयाथा ताका उत्तर लिखकरी नहीं भेजा सो भेजो और आपकी यह इच्छा है कि आप दोनूंही समजलेवा तो यह बात तो पहेंली ही करणेकी थी यदि आपका समझणे कार्य आशय होता तो पं० छाजूरामजी वा उनके पुत्र हनुमानजी इकल्ले हमारे घरपर आयकरी विचार करते परन्तु आप-तो एकदमही विनासम्मतिलीयें अशुद्ध लग्न वतलायदिया सो अब तो एक पण्डित मध्यस्थ हुवा विना काम चलैगा नहीं जो कदाच हमारा लग्न अशुद्ध होगा तो मध्यस्थाकी साक्षीमें शुद्ध कर दिया जावैगा यदि अशुद्ध न हुवा तो हमकूं झगडा करिके क्या लाभ होगा हमकूं ज्ञात है कि आप कहते है कि हम हार जावैगे तो रु-पैया १०१ एकसोएक देंगे सो हमतो गुतकर्मकीया नहीं चाहता अब क्याकरना सो लिखो विना मध्यस्थ काम चलैगा नहीं सं. वै १९५५-४- २--४

अपकापत्रद्रुतपादर्शनाऽभिलाषुक

श्री स्तोत्रिश्यायाऽन्धकार विनाशिनी जैनसभा सभापति राजमौघऽप्रपाल जैनवणिक् प्रधानाऽध्यापक

मुन्नालाल

जब इस पत्रका उत्तरभी न आया तो हमने पोष्टशीकरद्वारा एक पौष्टकार्डि-कपत्र लिखकरि भेजा ताकीप्रति

श्रीः २४

श्रीयुत पं० छाजूरामजी हनुमानजी प्रभृतिक समस्त ज्योतिर्विदोंकि सेवामें प्रार्थना है कि

अङ्क ३

महाशयगण

पत्र २ दोय अङ्क १।२ के आपकी सेवामें उपस्थित कर चुके उत्तर न

आया सो हम यह अङ्क ३ तीनका पत्र पोष्ट मार्ग देते हैं जिसकरि आप यह न कहै कि पत्र पहुंचे नहीं यदि आप इसकाभी उत्तर नदीजियेगा तो हम रजि-ष्टरी करिके भेजैंगे अब आपका आशय परस्पर सम्मति पूर्वक लग्न शुद्ध करने का होवैतो तो ऐसा कीजे नहीं तो शास्त्रार्थ करिलीजिये मध्यस्त पं श्रीनाराय-णजीभी आय गये है जिनकूं आपभी स्वीकारकरि चुके है सं वै १९५५ --४--२-५

आपका परस्पर सम्मति पूर्वक लग्न शुद्धिनिर्णयाऽभिलाषुक राजमौनउग्रवाल जैनवणिक् सभापति श्रीमती मिथ्यात्वाऽन्धकारविनाशिनी जैनसभा प्रधानाऽध्याप-क श्रीमता श्रीजिनवचनामृतऽतरङ्गिणी

जैनपाठशाला मुनालाल

ऐसा पत्र दिया गया हम नहीं जानते कि इसकाभी उत्तर क्यो न मिला फिर तो हम लोकोंनें प्रबन्धकर्ता श्रीयुत सेट शिवलालजी छाबड जैनसें प्रार्थना करी तो उन्होंनें आज्ञानपनकियाकि अब सभा हा जानै दोनों फिर प्रातःकाल सर्व्व लोक उक्त सेटजीकी कोठीपर एकत्रित होयहीगये और श्रीमति मिथ्यात्वान्धकारवि-नाशिनी जैनसभाके सभासद और मध्यस्थ पं श्रीनारायणजी ज्योतिर्विदभी आयविराजे और माहेश्वरी भ्रातगणभी पधारकरि सभाकों सुशोभित करी सो उन-की बडी प्रीति और गुणज्ञता है अब आगै जो वार्तालाप हुवा सो लिखाजाता है

सभामें प्रथमही प्रश्न उन लोकोंने ग्रहणके विषयमें किया तो प. श्रीनाराय-णजी कहि कि हमारी यह सम्मति है कि विवाद तो लग्न स्पष्ट पर है जिसके नि-र्णयार्थसभा करी गई है मुनालालजीनै जो स्पष्ट लग्न किया है उसकू तारतम्य गणितद्वारा सिद्धकीजे तुला है कि वृश्चिक प्रस्तुत विषय स्पष्ट लग्न निर्णय छाड-करिके अप्रस्तुत विषय ग्रहण निर्णयका छेडना अनुचित है यदि ग्रहणकाही नि-र्णय करना है तो इसके निर्णयानन्तर वहभी कर दिया जावैगा आर स्पष्ट ग्रहण करिके विज्ञापनपत्र वितीर्णकराय दीजे तथा स्थान स्थानमें चिपादीजे इधर प मु-नालालजीभी विज्ञापनपत्र वितीर्ण करवाय देगे देखै किसका स्पष्ट मिलता है फिर पं. मुनालालजी कही कि यदि आपकी ग्रहणके विषयमें ही शास्त्रार्थ करणकी इच्छा है तो ऐसेंही सही स्पष्ट लग्न विवाद पीछे होजावैगा प्रथमतो यहीबतला-इये कि सूर्यकितना उंचाहै अरु राहु कितना उंचा है और राश्यादि ०।०।०।० की सक्रान्तिके दिन मध्याह्नकालमें यहां रिवासामें बारह अंगलके शङ्कुकी-कितनी छाया पडैगी तथा उस समय सूर्य्य कितना दूर यहासें रहैगा फिर इनदोनूवातोंसें सूर्य्योच्चता सिद्धान्तशिरोमण्यादि ग्रन्थोंद्वारा सिद्ध कीजे

फिर उस उच्चता अरु दूरतासें रिवासैमें शङ्कुछाया अरु शङ्कु अरु भुमिकीगणि-तो मिलायदीजे तब उन्हीं लोकोने कह्याकि इन बातोसे क्या प्रयोजन आज तो स्पष्ट लग्न कीबात होगी फिर विना प्रयोजन की बात होगी तब पं मुनालालजी कही यह वात प्रयोजनकी है क्योंकि इसका विचार तो प्रथमही होना आवश्य-क है क्योंकि स्पष्ट लग्न होना तो उदयाश्रित है अरु उदय चराश्रित है अरुचर पलप्रभाश्रित है अरुपलप्रभासूर्य्योच्चिताश्रित है इसलिये सूर्य्योच्चतासिद्धकीजे तब उनलोकोने कुछकाकुछ वतलायदिया तो पं. मुनालालजी कहाकि हम मिलाय करा देखें कि ठीक है कि गणितमें आप कहीं भूलगये है बताईये कोन ग्रन्थकी को-नसी रीतिसें कैसें गणित करा बस इतनी बात होतें हीं वह लोक क्रोधित होय करिके पांचसातमिलकरिके हल्लामचायादियातो पञ्चलोकेने कहा कि हल्लाकरणैसें कुछ जीत नहीं समजे जावोगे शास्त्रकी बात है शास्त्रकी रीतिसेंहीकरो पं मुनाला-लजी चि. जोहरीमल्लके जन्मपत्रमें लग्न लगायासो कैसें असत्य है सो गणित द्वारा सिद्धकीजे तब उन लोकोने कहा कि हम गणित नहीं मानते लग्न सारिणी-सें देखलो लग्न अशुद्ध है अशुद्ध जन्मपत्रीके फाड़वगावो पुडिया बांधणैके काममें ल्यो इतनीबात सुनतेही पं श्रीनारायणजी बोलेकि अैसें समामें बोलनेकी रीति नहीं है गणितसें सिद्ध करो अरु इस जन्मपत्रपर लिखदेवो तब उनोने उस जन्मपत्रके शीसपर स्पष्ट लग्न ७।०।०।० अैसालिखदिया तो फिर पं. श्रीनारा यणजी कह्याकि अब आप लोक इस स्पष्ट लग्नकों गणितद्वारा सिद्धकीजे अरु हम-भी पं मुनालालजीका कियाहुवा स्पष्ट लग्न तुला गणितद्वारा सिद्ध करते हैं तब उन लोकोने कहाकि हम तो गणितका बात नहीं करते लग्न सारिणीसें मिलावें-गे वृश्चिक आतो है तब प. श्रीनारायणजी कही कि सारिणीमें तो अंशपर्य्यन्तस्थूल लग्न आता है कलादिक आती नहीं इसलिये गणितही प्रमाण है फिर पं. मुना-लालजी कहीकि कुछ चिन्ता नहीं सारिणीसेंही सही परन्तु सारिणी अलग अलग समयकी अलग अलग होती है इस कारण जिस संवत् मास मिती [illegible] लग्न लग्याहै उस समयकी सारिणी वणायकरी लग्न लगावो यदि [illegible] सारिणी वणा-णेकी क्रिया नहीं आतीतो मैं वनाद्यूंगा तो उनोने कहाकि हम [illegible] वे १९३७ कीही सारिणीसें मिलावेंगे तब पं. श्रीनारायणजी आदि [illegible] रोने कहाकि बडे बडे पण्डितो कृत जन्मपत्र वर्षफलादि ल्यायकरि आपके [illegible] देंगे उनका लग्न तात्कालिक सारिणीसें मिलावो यदि न मिलैतो एक पत्र लिखद्योकि यह स-र्व्वे जन्मपत्र अशुद्ध है फिर उनका निर्णय उनके कर्त्ताओसेंही करदिया जावै-गा यह क्या कोई वीरपुरुषोंकी कर्त्तव्यता है कि पराजय होय करिभी इस प्रका-

रकी जीतमाननाकि " मैयारीमैया इक मल हमकों असा पटकाक परिकेकम्
उसमडुबैनेधरती देखी अम्बर देख्याहम् " तब उन लोकोने पत्र लिखनाभी
स्वीकार नकिया तो सब लोकोने कह दिया की तब तो गणितही प्रधान रहगया
अब पं. मुनालालजीका लग्न गणितद्वारा अशुद्ध करिके दिखावो तब वह लोक कुछ
तो सभामेंसें चलेगये शेष रहे उन्होकूं कहा गयाकि यदि न गणितद्वारा असत्य
करोतो एक काम करो कि लग्न स्पष्टका उदाहरण आप एक पत्रमें लगायदीजिये
अरु एक पत्रमें पं. मुनालालजीभी लगाय देवैगे यह दोनूपत्र काशीके पण्डितोंपास
भेजदेते हैं जो वह लोक शुद्ध लिखमेजै सो शुद्ध यह परस्पर स्वीकृति हुई तो
पं. मुनालालजीपासतो करणग्रन्थाऽनुसार स्पष्ट लग्नका उदाहरण लिखवायलिया
अरु उन लोकोसें कहा गयातो उन्हाने यह उत्तर दियाकि हमतो सारिणीव
स्पष्ट लग्न जन्मपत्रपर ७।०।०।० यह लगायदिया सो यदिसारिणी झुठी तो हमारा
लग्नभी झुठा तदग्नन्तर निर्णयार्थ पत्र काशी, जयपुर, शीकर, कुचामण, रामगढ,
भेजदिये गये अब मैं धन्यवाद देता हू पं. श्रीनारायणजी ज्योतिर्विदकूं जे किसी
भी सभामें नहीं पधार ते है वह हमारी सभाकों सुशोभित किया इसांसें जाना
जाता है कि पण्डितजी साहिब बडे सज्जन है पण्डितजी साहिब प्रार्थना करते
है कि हे जैन पाण्डितवरो हमनें जो किया सो कोनसा अनुचित किया अवश्य
एकतो अनुचित किया कि सभामें सत्यार्थ कह दिया नहीं तो ब्राह्मणकूं स्वजाती
य समजकरिके पं मुनालालजी कासत्यार्थ सिद्धान्तकूं असत्यार्थ कह करि शास्त्रसें
विमुख हो जाते तो अच्छचा होतासो तो हमारैपास हो नहीं सका शास्त्र विरुद्ध
नहीं कह शक्ते ॥ अब वह निर्णयार्थ पत्र भेजदिये गयेथे ता उनके उत्तर आ-
णैमें विलम्ब होने लगातो यह सन्देह हुवाकि कदाच निर्णयपत्र न आवै तो अ-
पनेकूं तो अवश्यही निर्णय करणा होगा असा विचार करिके अरु हमने विज्ञापन
पत्र असेबणाय करिके स्थानस्थानमें वितीर्ण कराये तथा चिपवायेसो देखिये

जराइधरकूभीतो देखिये

अङ्क ५

सर्व्वसाधारणकूं विदित कियाजाताहै कि हमने जो लग्न स्पष्ठ कियाथा उसकूं
रिबासैकेकेई ज्योतिर्विदोने अशुद्धबतलाया सो उनकों यह चिठी लिखदेना चा-
हिये कि अशुद्ध है अथवा उदाहरण लिखकरि गणितद्वारा समजाना चाहिये

केवल प्रतिज्ञा मात्रही करिकेतो साध्यकी सिद्धि न होगी शास्त्रका प्रमाण देना उचितहै यह तो शास्त्रका बात है निर्णय तो अवश्य होना उचित है मित्रवर कोप न कीजे कोप करनेसें क्या अशुद्ध लग्न हो जावेगा बिचारकरि बोलिये यदि आप भूलगयेहै तो क्षमापत्रपत्र लिखजे हस्ताक्षर करदिये जावैगे हमाराभूल होवे तोभी निर्णय कीजे भूलणैका आश्चर्य्य नहीं है पत्रद्वारा बिचार करिलीजे जो अैसा न करोगेतो लग्न अशुद्ध न समजा जावैगा असत्य दोषारोपण क्या यह भी कोई पाण्डित्य है यदि सारिणीसेंहीं न मिलणैकरि अशुद्ध मानतेहै तो हम आपकृत तथा अन्य अच्छे अच्छे ज्योतिर्विदोंकृत जन्म पत्रिका आपकी दृष्टी गोचर करते हैं सो उनका लग्न सारिणीसें मिलाय दीजे यदि न मिलेतो " अशुद्ध है " अैसा एक पत्रमें लिखदीजे ताका निर्णय करदिया जावैगा गणितसें सिद्धकीजे गणितही प्रधान है आपने स्पष्ट लग्न ११०१०१० यह कियातो यह पूछते हैं कि यह कोन लग्न है क्योंकि तुलातोनुक्तभया अरु वृश्चिकके स्थानमें शुन्यहै तो कोनसा लग्न है आपका लग्न हम स्वीकार करतेहै परन्तु गणितसें सिद्धकीजे अब आपहि कहिये यह कोन लग्नहै कि कोईभी नहीं यदि कहो कोईभी नहीं तो यह कहियेकि कोई समय अैसाभी हैक्या जिसमें कोईभी लग्न नहीं होता यदि अैसाही भया तबतो यह बडा भारी दोष आवैगा कि अहो रात्रमें १२ बारह लग्न कैसें भुक्तेगे क्योंकि अहोरात्रकीतो ६० घडीथी जिनमें कितना समयतो अैसा हुवाकि उसेंमे कोई लग्नही नहीं होता तोशेषसमय ६० साठ घटिकासें अल्परहा तो उसमें ६० साठ घटिका बारह लग्नकी कैसें भुक्तेगी इसका उत्तर दीजे आपलोक पण्डित है पाण्डित्यकी रीतिसें बातकरो लोभ मानादि करिके शास्त्रका लोपमत करो महाराज खण्डेलाऽधीशके सुराज्यमें शास्त्रके लोपकी पोल न चलैगी और आप एक सारिणीहीकी पक्ष स्वीकार करने होतो स्पष्ठ लग्नादि किया आचार्य्योंने क्या वृथाही कही इसका उत्तर दीजे हमतो आपकूं अबभी ज्योतिर्विद समजते है आप एकान्तपक्ष मत पकडो " एकान्तवादी मिथ्यादृष्टि " इसे उक्तिके प्रमाणसें मिथ्यादृष्टि नहूजे यद्यपि सारिणी सत्य है परन्तु किसी अपेक्षा " नय " सें यदि आपन य प्रमाणकूं जानते तो अैसा कभी न बोलते महाशय सारिणीमें तो अंश पर्य्यन्तही आता है कलादिक तो नहीं यदि सारिणीही की पक्ष पकडतेहै तो इसका उत्तर दीजे कि आप कोनसं मानेगें यदिक होंगे अमुक संवतकी मानेंगे तो हम पूछते हैं तदितर संवतकी क्योंनहीं अरुभिन्नाभिन्न वर्षोंकी भिन्नाभिन्न सारिणी क्योंबनी एकही सारिणीसदैव क्योंनहीं रहती तो आप यही कहोगेकि प्रतिवर्ष अन्तर पडता है तो फिरपूछा

आताहैकि जब बर्षमें अन्तर पडताहै तो मासमेंभी अन्तर पडेगा अरु मासमें अन्तर पडनेसें दिनोंमें दिनोंमें अन्तर पडनेसें घटिकाओंमें घटिकामें पडनेसें पलमें पलमें पडनेसें विपलमें विपलमें पडनेसें प्रतिविपलमें तो प्रतिविपल प्रतिविपलकी सारिणी पृथक पृथक ठहरगई जब ऐसा भयातो आप एकवर्ष पर्य्यन्त एकही सारिणी मानोगेतो अन्तर कैसें न पडैगा इसलिये यह सिद्धभयाकि सं. वै. १९३७ ९-२-२ शनिवार सूर्य्योदयादिष ५२।५७ (जिस समयका हमने लग्न लगाया है) के समयकी सारिणीसें आप लग्न मिलाइये बराबर मिलैगा उक्त समयकी सारिणी आप न बनाय सक्तेहैं तो आज्ञादीजे मैं बनायकरि आपकी सेवामें उपस्थित होऊंगा मित्रवर एकही सारिणीसेंभी सदैवकार्य्य चलशक्ताहै परन्तु नतो आपकेपास वह सारिणीहै अरु न आपने बनानेकी शक्ति अरु न आपकी समजणेकी शक्ति यह सबगणित विद्यानहीं जाननेकाही फल है सो क्यों नहोवे आप गणितविद्या मानतेनहीं इसलिये गणितविद्याका आप परकोप होयगया जबसें हमारे आर्य्यावर्तमें गणितविद्याके लोकोने अवतार धारण किया तबहीसें हमलोक हानदीन कोडीके तीन तीन होयगये यदि आप आहर्गाणिक गणितसे स्पष्ट लग्न कर्य चाहैतो हम इसबातमेंभी अत्यन्त सज्जीभूत हैं न्यायपूर्व्वक बातकरोतो तो सबकुछ हो शक्ताहै परन्तु लठेसेंही बातकरो तो आपके लठकू ३½ साडेतीनबार नमस्कार

इस पत्रकू जो नष्टकरैगा उसकू उसके धर्म्मकी शपथहै राजाकूं अरु स्थानाऽधीशकूसर्व्वाधिकारहै राजसेंभी मेरी यही प्रार्थनाहैकि इस पत्रके नाशकोंकू दण्डित करै

भवदीयोत्तराऽभिलाषी

जिला जयपुर पोष्ट शीकर मुकाम रिवासा मकानके अङ्क २१२ दोसौबारह राज्यमौच्यज्यबालजैनबाणिक प्रधानाऽध्यापक श्रीमती श्रीजिनवचनाऽमृततरङ्गिणी जैनपाठशाला सभापति श्रीमती मिथ्यात्वाऽन्धकारविनाशिनी जैनसभाऽविहारसंस्कृतसञ्जीवनीयसाहित्य मध्यमपरीक्षोत्तीर्ण

मुनालाल

इस विज्ञापनकूं प्रकट करिकेभी कोई सिद्धान्त नठहच्या अरु न उनलोकोने हस्ताऽक्षरकियेतो पण्डितजी श्रीमुनालालजी पं. श्रीनारायणजीसें प्रार्थनाकरी वि

आप शीकर जायकरिके समस्त ज्योतिर्व्विदोंकी सभाकरिके सम्मति पत्रलिखाय ल्याईये सो श्रीमानने स्वीकार करी तत्काल शीकार पधारकरी ज्योतिर्व्विदों-पासे सम्मति पत्रलिखायल्याये तथा रिवासामेंभी २।४ पण्डितथे उनकी सम्मति लिखाईगई तबभी सिद्धान्त न भयातो पं मुनालालजीकूं खण्डेलै भेज दियेगये अब सम्मति लिखनैवालें विद्वानोंकें नाम

१ पं. श्रीनारायणजी वास्तव्य रिवासा
२ पं. श्री युगलकिशोरजी वैद्य वा. रिवासा
३ पं. श्री जगन्नाथजी भागचन्द्रजीकोका वा रिवासा
४ पं. श्रीभोलारामजी रामकुमारजी वा. शीकर
५ पं. श्रीनन्दजी शर्म्मा वा शीकर
६ पं. श्रीशिवलालजी वा. शीकर
७ पं. श्रीगणेशदत्तजी वा शीकर
८ पं. सर्व्वदर्शनदिग्दर्शनविद श्रीहनुमद्विजयजी वा. लक्ष्मणगढ इतने श्रीवरोंकी सम्मतिका पत्रहुआ अरु चिठी एक कुचामणसें पं. श्रीरामचन्द्रजी सिद्धान्ती ज्योतिर्व्विदकीभी आईसो चिठी डाकिये परवारी खण्डेलें पहूंचाई कासद्विक्षप्त

श्री.

सिद्धश्री रिवासा शुभस्थानें सर्व्वोपमा योग्य सेठजी श्री मुनालालजी योग्यलिखी श्रीकुचामणसें शुभचिन्तक ज्यो. रामचन्द्र श्रीकृष्णको आशिर्व्वाद बांचज्यो अत्रशन्तवाऽस्तु अपरञ्चपत्र आपको आयो और आप सं वै. १९३७-९-२-३ शनिवारेष ५५।५७ सामयिक स्पष्ट लग्न परिवाद होणैकी लिखी अरु हमारै पास निर्णय पत्र मंगायो सो ठीक सौर पक्षको वरतारोग्रह लाघवसें इसप्रकार चक्र ३२ ग्रन्थताब्द ३६० अधि. मा. ५ अहर्गणि १२२६ को मध्यमार्क ७।२१।०।२८ तात्कालिकार्कस्फु ७।२१।५७।३२ के. ६।२७।२।२८ मन्दफ ०।५९।४० रु०. ग. १।५४ धनम् र मं. स्प ७।२०।५७।५२ ग. ६९।२ च. प २१४ च. स्प. र. ७।१०।५९।४६ अय. २२।३७।३९ स्पष्ट लग्न सौरपक्षींय ६।२९।४६।१२ निस्सेन्देह यह लग्न आता है तथा ब्रह्म पक्षसेंभी तुलाही आवै है यथा अहर्गण २५४८५२ मन्दफलचर संस्कृत देशान्तर रामविनोदि संयुत रू. स्प. ७।२१।६।३० ग. ६१।१२ ब्रह्मपक्षे स्पष्ट लग्न ६।२९।४०।८ एवं-

दोनू ही प्रकारसें तुला लग्न आता है यह निर्भ्रमहैं सो जाणज्यो इत्यादि इत्यादि सं. वै. १९५९-५-१-१०

तथा रामगड पोष्ट मारोठके तहसीलदारजी श्री मङ्गलसेनजी अग्रवालकी सभासें भी निर्णयकीयागया तो पं गङ्गाबखाजी शिवबरूशजी तुलाही स्पट किया तहसील दारजीके और उनकी सभाके पण्डितोंके हस्ताऽक्षरका विजयपत्रभी पण्डितजीके पास है यह विजयपत्र तहसीलदारजी साहिब दीया सो पीछै मिला है फिर पं. मुनालालजी हर नारायणजी रुहीकडाकूं साथ लेयकरिके खण्डेलै जाय करि श्रीमन्महाराज खण्डेलाऽधीशजीके प्रधानगुणज्ञवर श्री आनन्दीलालजीसें मिलेतो बडे योग्यज्ञानहुये बडासत्कार किया तो चित्त अत्यन्त प्रसन्न हुवा तथा रिवासैके राज्य कार्य्यकर्ता वक्तावरमल्लजीधापई अरु हनुमानजी कायस्थ रिवासे वाले अरु रामप्रतापजी रुहीकडा आदि समस्त सज्जनोद्वारा खण्डेलाऽधीश श्रीमन्माहाराज श्री १०८ हमीरसिंहजीकें दर्शन कीये श्री मानने आगम न कारण श्रीमुखसें पूछा तो यह श्लोक कहा गया

मन्दाक्रान्तावृत्तम

रैवासायास्संदसिपतितंस्पष्टलग्नेविवाद
छाजूरामैश्चकिलविहितंवृश्चिकंविप्रवर्य्यैः ॥
कृत्वाऽवज्ञाम्ममहिनितराङ्खणिडतंजूकलग्नम
यत्कर्त्तव्यन्तदिहविषयेदेवणवप्रमाणाम ॥ १ ॥

औरभी आशीर्व्वाद श्लोकपत्र बनायकरिलेय गयेथें उसकूं श्रवण करी अति प्रसन्न भये तो श्रीमाननें अपने समस्त विद्वान जे श्रीमोहनलालजीमाणाका अरु रामबरूशजी दोहलिया आदि विद्वानोंकू स्पष्ट लग्नकरणेके लिये निवेदन किया अरु हमारे शुभभाग्योदयसें खेतडी महाराजके भूतपूर्व्वज्योतिर्विद श्रीहनुमानजीभी पधारे तो सबश्रीवरोंने सम्मतिपत्र देसे अरु आपभी सिद्धान्त रहस्यादि ग्रन्थोंके अनुसार तुलाही स्पष्ट किया उक्तश्रीमानोंने तीन दिन पर्य्यन्त अत्यन्तही परिश्रम कियासो उनका बडा उपकार है स्पष्ट लग्न करिके एक विजय पत्र बनाय करिके श्रीमहाराजके समीप भेज दिया तो फिर श्रीदरबारनें मोहर छाप लगाय करि विजयपत्र निजकरकमलोंसें पं. श्रीमुनालालजीकूं दीयासो पण्डितजी साहिबनें

अति हर्षित होय करि मस्तकपर धरलिया फिर श्रीभूपालवरजीकी आज्ञाप-ना लङ्कारालङ्कृत नमस्तक होय करि रिवासै आये वहां श्रीभूपवरजीकी कचहरी-में हाकिमोंके हुकुमसें सबपण्डित तथा पञ्चोंकूं बुलायकरि पं. छाजुराम हनुमान बाछाणीदायमाकूं उनके सपक्षी लोकोंसमेत बलायकरि विजयपत्र गङ्गासहायजीके मुखसें सर्व्वकूं सुनाया गया अरु प्रतिपक्षियोंकूं अत्यन्तोपालम्भ दीया गया अरु कहा गया कि खबरदारहै जो आगैनै किसीसेभी विवाद किया है तो वहलोक अति लज्जित होयके वेगये इस कार्य्यसें मन्नूजी आदिकरावभी बहुत प्रसन्न भये पीछै श्रीखण्डलाऽधीश्वरजीको जयकारेकी ध्वनिसाथ सभा विसर्ज्जन हुई यद्यपि इसपत्रके मिलणैमें कितनेंही मनुष्योंनें बहुत अन्तराय डाले परन्तु श्रीमत्क्षितिपवर खण्डेलेशजीकी मातृवत्सलता हम लोकोंपर अत्यन्तही रही श्रीमान पक्षपातरहीत काव्यके रसिक धर्म्मज्ञ सत्य न्याय कर्त्ता है ऐसे नृपाल इस कालिकालमें कोई विरलेही होगे श्रीमानके मुसाहिबादिक तथा दिवानजी साहिब बडे धर्म्मात्मा है शास्त्रमर्याद प्रतिपालक है निरतर धर्म्मपुण्यमेंहीं लवलीनरहेहै ऐसे भूपाल सदा जयवन्त होवै जिनोने हमरा सत्यन्याय कीया श्रीजिनेन्द्रदेव हमारे महाराजकूं पुत्र देवै अरु अखण्ड इकछत्रराज्यरक्वै प्रताप बढावै जिनोने अत्यन्तही धर्म्मन्याय किया अरु रामप्रतापजी ब्राह्मण ल्हीकडाभी परिश्रममें कुछ त्रुटि न करीसो इनका बडा उपकार है अब सेठजी साहिब श्रीशिवलालजी जैनछाबडाकूंभी अत्यन्त धन्यवाद देना उचित है कि जिनोने ऐसे ऐसे पण्डित वरपासमें रखणेकी रुचि है सं. वै. १९५५--५--१--१४

ग्रंथकर्ता.

जिला जयपुर पोष्ट शीकर मुकाम **रिवासा** श्रीमती मिथ्यात्वाऽन्धकार विनाशिनी जैनसभाकी सम्मतिसे सभापति जैनाग्रवाल मुनालाल.

इति छाजूराम हनुमद्बाछाणीदायमा पराजयस्समाप्तः

